International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 10 Issue 8 Ser. III || August 2021 || PP 53-56

हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श

डॉ0 सुनन्दा महाजन
विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर
सेठ पी.सी. बागला (पी.जी.) कॉलेज, हाथरस।

महाभारत और रामायण, पुराण जैसे भारतीय महाकाव्य, विभिन्न प्रकार के प्राणियों का उल्लेख करते है। ये जीव मानव से श्रेश्ठतर या कमतर हो सकते थे, तथा किसी अन्य संसार के वासी भी हो सकते थे। इसमें से कई जनजातियों का मजबूत ऐतिहासिक आधार है जबकि अलौकिक और काल्पनिक पहलुओं को साहित्यिक अफवाह या अटकलें कह सकते है।

इन समूहों में देवता, असुर, गंधर्व, यक्ष, किन्नर, किरात, किंपुरुष, राक्षस, नाग, सुपर्णा (गरुड़) वानर, विद्याधर, कलखिल्य, पिशाच, रुद्र, आदित्य, दानव, मारुत, निवातकवच, दैत्य, और वसुओं का वर्णन है।

किन्नर हिमालय के क्षेत्रों में बसने वाली एक मनुष्य जाति का नाम है। जिसके प्रधान केन्द्र हिमवत और हेमकूट थे। संभव है कि किन्नरों से अभिप्राय उक्त प्रदेश में रहने वाली मंगोल रक्त प्रधान उन पीत वर्णो से ही किन्नरों की उत्पत्ति के विषय में कही गया है। जिनमें स्त्री–पुरुश भेद भौगोलिक और रक्तगत विशेषताओं के कारण आसानी से न किया जा सकता हो। किन्नरों की उत्पत्ति के विषय में कहा गया है कि एक तो यह ब्रह्म की छाया अथवा उनके पैर के अंगूठे से उत्पन्न हुए और दूसरा यह है कि अरिष्ट और काश्यप इनके आदि जनक थे। हिमालय का पवित्र शिखर कैलाश किन्नरों का प्रधान निवास स्थान था, जहाँ वे शंकर जी की सेवा किया करते थे। उन्हें देवताओं का गायक और भक्त समझा जाता है और सबको यह भी मानना है कि यक्षों और गंधर्वो के के समान नृत्य और गाने में प्रवीण होते थे। विराट पुरुष, इन्द्र और हरि अनेक पूज्य थे और पुराणों का कथन है कि कृष्ण का दर्शन करने के द्वारका तक गये थे।

वैदिक साहित्य से प्रभावित भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता और विविधता ने सम्पूर्ण विश्व के विद्वतजनों को सदा से ही आकर्षित किया है। ''ऋग्वेद में भी थर्डजेंडर का उल्लेख मिलता है। जब इंद्र स्वयं को स्त्री के रूप में परिवर्तित कर लेते है।''1

वैदिक साहित्य में मानव लिंग व्यवस्था को प्रकृति के अनुसार तीन भागों में विभाजित किया गया है। ''प्रथम पुरुष, द्वितीय स्त्री तथा तृतीय प्रकृति।''2

शतपथ ब्राह्मण में यह सिद्ध किया गया है कि ''इंद्र वृशणव की पत्नी बने।''3 ऋग्वेद में थर्ड जेंडर से संबंधित एक कथा मिलती है वह यह कि ''प्रायोगि के पुत्र ईष्वर द्वारा शापित होने के बाद स्त्री बन जाता है।''4 शिवपुराण के अनुसार किन्नरों की उत्पत्ति का श्रेय शिव को दिया जाता है। महाकवि भारवि के ''अपने ग्रंथ किरातानुर्जनीय के हिमालय खंड में किन्नर, गंधर्व, यक्ष, अप्सराओं आदि देव योनियों के किन्नर देश में निवास होने का वर्णन किया है।''5

''वायु पुराण में महानील पर्वत पर किन्नरों का निवास बताया गया है। मत्स्य पुराण में किन्नरों का निवास हिम्मबाण पर्वत बताया गया है।

मनुस्मृति में भी किन्नरों से सम्बन्धित उल्लेख मिलता है :–

''दैत्य दानव यक्षाणां गंर्धवोरगराक्षसाम।

सुपर्ण किन्नराणां च स्मृता बहिशदोत्रिजा।''6

आदिकाल में प्रमुख रूप से ये जातियाँ थी–देव, दैत्य, दानव, राक्षस, यक्ष, गंधर्व, किन्नर, नाग आदि। देवताओं को सुर तो दैत्यों को असुर कहा जाता था। देवताओं की उत्पत्ति अदिति, तो दैत्यों की दिति से उत्पत्ति हुई। दानवों की दनु से राक्षसों की सुरक्षा से, गंधर्वो की अरिष्टा से हुई। इसी तरह से यक्ष, किन्नर नाग की भी उत्पत्ति मानी गयी है।

'रामचरितमानस' में श्री तुलसीदास ने किन्नर शब्द की चर्चा करते हुए कहते है कि दक्ष का निमंत्रण पाकर किन्नर, नाग, सिद्ध, गंधर्व और सब देवता अपनी स्त्रियों सहित चले।

''किन्नर नाग सिद्ध गंधर्वो

बधुन्ह समेत चलें सुर सर्वा।''7

मदन अंध व्याकुल सब लोका। निसिदिनु नहिं अवलोकहिं कोका

देव दनुज नर किन्नर ब्याला। प्रेम पिसाच भूत बेताला।''8

तुलसीदास कहते है कि सब लोग कामांध होकर व्याकुल हो गए। यह समझकर मैने इनकी दषा का वर्णन किया है। चकवा चकवी भी रात दिन नहीं देखते। देव, दैत्य, मनुश्य, किन्नर, सर्प, प्रेत, पिषाच, भूत, बेताल सभी काम के गुलाम है।

एक ओर कथा राम चरितमानस में है जो भगवान राम के वनगमन में सबंधित है– 'जब भरत राम से मिलने चित्रकूट जा रहे थे तब सभी अयोध्यावासी भी उनके साथ चित्रकूट आए थे। अयोध्यावासियों के विनय को अस्वीकार करते हुए प्रभु जी राम ने सभी नर नारियों को वापस अयोध्या लौट जाने के लिए कहा, परन्तु उनके संबोधन में हिजड़ों का नाम नहीं था, अपितु किन्नर 14 वर्श तक प्रभु जी राम के आने की प्रतीक्षा करते रहे। वापसी पर भगवान श्री राम उन्हें मिले तब उनकी निवछल और निःस्वार्थ भावना से अभिभूत होकर उन्हें वरदान दिया कि तुम जिन्हें भी आषीर्वाद दोगे, उनका कभी अनिश्ठ नहीं होगा।

इस तरह से हमें रामचरित मानस में स्थान–स्थान पर किन्नर शब्द का उल्लेख मिलता है। महाभारत में भी राजा द्रुपद के कोई संतान नहीं थी। उन्होंने संतान के लिए भगवान शिव की उपासना की थी। भगवान शिव ने प्रसन्न होकर कहा ''तुम्हें एक पुत्री पैदा होगी।'' राजा द्रुपद बोले 'भगवन! मैं कन्या नहीं चाहता, मुझे पुत्र चाहिए। इस पर शिव ने कहा– ''वह कन्या ही आगे चलकर पुत्र रूप में परिणत हो जाएगी।'' इस वरदान के फलस्वरूप राजा द्रुपद के घर कन्या उत्पन्न हुई। राजा को भगवान शिव के वचनों पर पूर्ण विश्वास था। इसलिए उन्होंने उसे पुत्र के रूप में प्रसिद्ध किया। रानी ने भी कन्या छिपाकर असली बात किसी पर प्रकट नहीं होने दी। उस कन्या का नाम भी मर्दो जैसा 'शिखंडी' रखा और उसे राजकुमारों की पोशाक पहनाकर यथाक्रम विधिपूर्वक विद्याध्ययन कराया। समय पर दशार्ण देश के राजा हिरण्यवर्मा की कन्या से उसका विवाह भी हो गया। हिरण्यवर्मा की कन्या जब ससुराल में आयी तब उसे पता चला कि शिखंडी पुरुष नहीं हैं, स्त्री है तब वह बहुत दुखी हुई और उसने सारा हाल अपनी दासियों द्वारा अपने पिता राजा हिरण्यवर्मा को कहला भेजा। राजा हिरण्यवर्मा को द्रुपद पर बड़ा ही क्रोध आया और उन्होंने द्रुपद पर आक्रमण करके उन्हें मारने का निश्चय कर लिया। इस संवाद को पाकर राजा द्रुपद युद्ध से बचने के लिए देवाराधन करने लगे। इधर पुरुष वेशधारी उस कन्या को अपने कारण पिता पर भयानक विपत्ति आयी देख कर बड़ा दुख हुआ और प्राण त्यागने का निश्चय करके चुपचाप घर से निकल गयी। वन में उसकी स्थूणाकर्ण नामक ऐष्वर्यवान वान यक्ष से भेंट हुई। यक्ष ने दया करके कुछ दिनों के लिए उसे अपना पुरूशत्व देकर बदले में स्त्रीत्व ले लिया। इस प्रकार षिखंडी स्त्री से पुरूश हो गया और अपने घर आकर माता–पिता को आष्वासन दिया। अपने ष्वसुर हिरण्यवर्मा को अपने पुरूशतत्व की परीक्षा देकर उन्हें षांत कर दिया। इस प्रकार षिखंडी स्त्री से पुरूश हो गया। कुबेर के षाप से स्थूणाकर्ण यक्ष जीवनभर स्त्री रह गए। इससे षिखंडी को पुरूशत्व लौटाना नहीं पड़ा और वे पुरूश बने रहे। भीश्म पितामह को यह इतिहास मालूम था। इसी कारण वे उन पर षस्त्र से प्रहार नहीं करते थे। वे षिखंडी भी बड़े षूरवीर यौद्धा था। इन्हीं को आगे करके अर्जुन ने भीश्म पितामह को मारा था।

कालिदास के रचनाओं में भी किन्नरों का उल्लेख मिलता है। 'मेघदूत' 'रघुवंष' और 'कुमार संभव' तीनो ग्रंथो में 'यक्ष' गंधर्व, किन्नर आदि के साथ वर्णन है। महाकवि माघ के 'शिशुपाल वध' महाकाव्य में भी किन्नर घोड़े के मुख पाले रूप में वर्णित है। 'शतपथ ब्राह्मण''8 में भी अष्वमुखी मानव शरीर वाले किन्नर का उल्लेख है।

महाभारत में पाण्डवों के वनवास में एक वर्ष का अज्ञातवर्ष भी था जो उन्होंने विराट नगर पाण्डव अपना नाम और पहचान छुपा कर रहे थे। इस प्रसंग में अर्जुन को शश्ढक या वृहन्नला कहा है शश्ढक शब्द का अर्थ है– नपुंसक। अर्जुन इस समय उर्वशी के शाप से नपुंसक हो गए थे। वृहत + नल (यहां ल, र का अंतर न मानने के कारण नल के स्थान पर नर माना जाता है। अर्जुन एक महामानक के मानव रूप सामने आते है। वृहत–महानल = नर (मानव) महामानव महाभारत में 'दिग्विजय पर्व' में अर्जुन का किन्नरों के देश में जाने का वर्णन आता है।

चाणक्य ने भी अर्थशास्त्र में किन्नरों का उल्लेख किया है। 'इतिहास में' भी मुसलमान शासको द्वारा अपनी रानियों की पहरेदारी के लिए किन्नरों को रखने के प्रमाण मिलते है। मुगलो ने भारत पर सदियों तक शासन किया और जैसा कि मुगलों का हमेशा राजसी व्यवहार रहा है एक राजा की कई रानियाँ होती थी। अकबर ने रानियों के कक्ष में किन्नर रखना शुरू किया था। हालांकि इसका उद्देश्य न केवल रानियों पर नजर रखना था, बल्कि ये प्रशिक्षित किन्नर हथियार चलाने में माहिर होते थे। अकबर के शासन काल के दौरान रानियों के कक्ष को 'हरम' कहा जाता था। जब कक्ष में बहुत सी रानियाँ होती थी तो सुरक्षा की बहुत आवश्यकता थी। मुगल सम्राट स्वयं रानियों में रखने से घबरा गए थे। रानी महल में रानियों और नौकरों के बीच अवैध संबंध आम थे, जो किसी भी सम्राट को शर्मिंदा करने के लिए पर्याप्त

था। किन्नर राज ने की शुरुआत सम्राट अकबर ने की थी। लेकिन अकबर के बाद भी सभी मुगल सम्राटों ने इस परम्परा का अच्छी तरह पालन किया। यहाँ तक सम्राट अकबर ने उन्हें उच्च सम्मान में रखा था।

हिन्दी साहित्य में पिछले कई वर्शो से षषिए पर जीवन जीते हुए किन्नर समाज पर लिखा जा रहा है। इक्कीसवीं सदी में तो किन्नर समाज पर बहुत अधिक साहित्य लिखा गया। इसमें निरन्तर वृद्धि हो रही है। समाज के हाशिए पर जीवन व्यतीत करने वाले किन्नरों को साहित्य में पहचान मिली ही साथ ही कुछ हद तक इन्हें समाज में सम्मान मिला है। किन्नर गुरू पायल सिंह के वास्तविक जीवन और उनके द्वारा किए किये गए संघर्श पर आधारित इस उपन्यास में पूरे किन्नर समाज का यथार्थ साफ देखा जा सकता है। उपन्यास में पायल तीखा सवाल उठाते हुए साफ कहती है 'हमें किन्नर नहीं, इंसान समझा जाए। बस उनकी इतनी सी मांग है कि वे मुख्य धारा से जुड़ना चाहते है। देष के विकास में वे भी अपनी भूमिका अदा करना चाहते है। 'मैं हिजड़ा मै लक्ष्मी' आत्मकथा किन्नरों के सामाजिक यथार्थ, उनके संघर्श और उस संघर्ष के माध्यम से समाज में अपनी एक खास पहचान बना लेने की सच्ची कहानी है। इसी तरह से प्रदीप सौरभ कृत तीसरी ताली, निर्मला भुराड़ियाँ की 'गुलाम मंडी' चित्रा मुद्गल की 'नाला सोपारा' महेन्द्र भीश्म की किन्नर कथा आदि कई उपन्यासों में किन्नर जीवन के दर्द, पीड़ा के साथ ही उनके प्रति सहानुभूति दोनों की अभिव्यक्ति हुई है।

लेकिन आज भी वर्तमान परिस्थितियों में किन्नरों को लोग समाज का हिस्सा मानने से कतराते है क्योंकि वह सभी से बहुत अलग होते है। हमारे समाज में हमेशा दो लिंग 'स्त्री' और 'पुरुष' प्रमुख रहा है। जो समाज को हमेशा से गतिशील रखा है। दोनों लिंगो के अलावा थर्ड जेंडर है। ऐसा नहीं है कि किन्नर आकाश से टपके है। ये किसी न किसी परिवार का हिस्सा है। इनके भी मां–बाप है, फिर भी इन्हें परिवार से अलग कर दिया जाता है, आखिर क्यों? इसके लिए जिम्मेदार कौन है? मां–बाप, भगवान या खुद किन्नर। मेरे ख्याल से शायद कोई भी नहीं, या सभी पक्ष और आज भी समाज इन्हें तीसरे स्तर का ही दर्जा देता है? घर में कोई खुशी आए, शादी–निकाह हो, किसी नन्हे मेहमान का आगमन हो तो द्वार पर किन्नरों का आना, बधाई देना शुभ माना जाता है। समाज से दूर रहने वाले किन्नरों को बधाई गाकर जो मिलता है, उससे ही उनका गुजारा होता है। उनकी बजायी गयी ताली दूसरों के लिए दुआ बनती है।

शायद ही कभी हमारे समाज के ट्रांसजेंडर समुदाय के सदस्यों के दर्द आघात और पीड़ा का अहसास होता है। हमारा सम्मान अक्सर ट्रांसजेंडर समुदाय को उपहास का पात्र बनाता है। उनके साथ अछूत के रूप में व्यवहार किया जाता है। परिवार की खुशहाली की दुआ करने वाले किन्नर अक्सर हमारे बीच बच्चे के जन्म या विवाह संस्कार का नेग लेने के लिए आते है। ये आपकी हर खुशी में शामिल होते हैं। इनकी दुआएँ बहुत पवित्र होती है। इनकी बददुआओं को अभिशाप माना जाता है। उनका रहन सहन साधारण मनुष्यों से भिन्न होता है। यहीं कारण ही कि आम मनुष्यों में उनके जीवन के प्रति जिज्ञासा बनी रहती है। आज के समय में भी इनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति अच्छी नहीं है। जिसके फलस्वरूप इन्हें बाजार, सड़क, ट्रेनों आदि जगहों पर ये अक्सर भीख माँगते मिल जाते हैं। कई बार तो लोग इनसे पीछा छुड़ाने की कोशिश करते है। कोई भी इनका दुख दर्द नहीं समझता या महसूस नहीं करना चाहता।

किन्नर समुदाय की स्थिति बहुत ही दयनीय है। आज जब हम मशीनी युग, आद्यौगिक युग में अपना जीवन जी रहे है। जहाँ बटन दबाते ही चुटकियों में सभी काम हो जाते हैं। लेकिन हमारी सोच आज भी जकड़ी हुई है। ट्रांसजेंडर के अधिकारों की बात करें तो 1871 से पहले भारत के किन्नरों को अधिकार मिला था। सन् 1871 में अंग्रेजों ने किन्नरों को क्रिमिनल ट्राइब्स यानी एक जनजाति की श्रेणी में डाल दिया था। लेकिन भारत के आजाद, होने पर संविधान बना तो सन् 1951 में किन्नरों को क्रिमिनल ट्राइब्स से निकल किया गया। परन्तु उन्हें उनका हक नहीं मिला। शायद यही एक वर्ग है। जिसे परिवार से लेकर समाज और बाजार तक किसी ने काम नहीं दिया। मुख्य चुनाव आयुक्त टी. एन. शेशन के 1994 में किन्नरों को मताधिकार दे दिया था। लेकिन जब तक समाज में जागृति नहीं आएगी तब तक कोई भी कानून या सरकार इसे मुख्य धारा में नहीं ला सकती है।

कितनी आश्चर्य की बात है कि इतिहास में आदिकाल से, रामायण द्वापरयुग के महाभारत में भी किन्नरों के सामाजिक उपस्थिति के प्रमाण मिलने के बावजूद भी मनुष्य के रूप में समाज किन्नरों को उचित स्थान नहीं दे सका है। आज भी हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श हाशिये में है। आम आदमी को भी किन्नरों के भीतर धड़कनें वाले दिल को समझना होगा और उसके लिए उचित प्रयास करने होंगे।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. ऋग्वेद 1.5 1.13
2. स्वेतवस्त्र उपनिशद, गल्वा 108
3. शतपथ ब्राह्मण : 3 : 3.4.18
4. ऋग्वेद 8.33.19
5. किरातार्जुनीय, (पाँचवा सर्ग, श्लोक 17)
6. मनु स्मृति, तृतीयोऽध्याय, 113 : 196

7. रामचरितमानस, तुलसीदास, बालकांड, मझला साइज, पृ060
8. वही, पृ0 78
9. शतपथ ब्राह्मण (7.5.2.32)